Singer Amarnath

ASHA BHATIA

LOOKS ARE deceptive, they say. But when you look at Amarnath you are sure that your impression of him being an artiste is correct. He has made a powerful impact on those who have heard him. He has a deep, mellow voice with a nimbleness of tone, and this is rendered beautifully in the countless *ragas* he has sung in the *khayal*.

His mother died leaving him a lonely child at an early age. In his melancholy surroundings his feelings gave way to expression—an expression which was cultivated and led him on to the world of music.

Though keen to take medicine at first, his singing abilities were noticed, and this led him on to a different track altogether. He joined the A.I.R. and rose to become the music supervisor, a job which he retained for seven years.

And then? " I tried my hand at musical compositions, both light and classical," he says. And were they successful? Modesty on his rugged face, gave the answer.

And that was not all. A producer asked him to compose the musical score for a feature film *Garm Coat*. Lata Mangeshkar sang two of the songs set to music by him, and was so moved by the music that she refused to accept any payment.

No Payment

When they insisted she said, "After a long time a song has moved me. I will not accept any payment for singing it."

Recently, Lata, in her LP of her life's twelve best songs, chose one with Amarnath's music, *Jogia Se Preet Kiye*.

And then, when the Ghalib Centenary was on, he was selected among numerous others to provide the musical score for the documentary on Ghalib.

Continued on page 18

ASHOK BHARAL

AMARNATH : Power to move hearts

Singer Amarnath

Continued from page 15

"It was a privilege," he says proudly.

Besides singing, Amarnath still has time to cook. Cook? Right, cook. And he cooks such delicious food that he even outdoes his wife. Not that he admits it, of course. He prefers his wife to be mistress of the kitchen.

At present, he is the Head of the Music Deparment of vocal music at Triveni Kala Sangam. His music he owes to his two gurus, Shri B.N. Datta and the famous Ustad Amir Khan.

Having a style completely his own, this talented man may become yet another Ustad for he is fast on his way to fame.

AS A MUSIC CRITIC.

~~[illegible]~~ प्रजानीति — संगीत — 15th June. 75 (Sunday

संगीत

पिछले शनिवार को आकाशवाणी के अखिल भारतीय संगीत कार्यक्रम में नागपुर केंद्र के कलाकार हमीद हुसैन का सारंगी वादन हुआ। कार्यक्रम आदि से अंत तक सुर में था। विस्तार-पूर्ण वादन के लिए इन्होंने सबसे पहले राग 'मारु बिहाग' प्रस्तुत किया। इस राग में दोनों मध्यम लगाने की रीत है। लेकिन उन्होंने केवल एक ही मध्यम (तीव्र) से काम चला लिया। फिर भी राग का रूप बना रहा। राग का विस्तार तो ढंग से हुआ लेकिन हर बोल की बनावट जब तक 'सा' (खरज) पर न्यास न करे तब तक कहा-सुना सार्थक नहीं होता। इस तरह 'ग म (तीव्र) रे' की जगह पर 'ग म (तीव्र) रे सा' का प्रयोग होना चाहिए था। हर स्वर की बढत के बाद यह लगता था कि कलाकार खरज पर ठहरता तो चैन पड़ता। अर्धविराम और पूर्णविराम का भेद साफ नहीं हो पाया। राग की सूझ-बूझ भी कुछ गहरी नहीं जान पड़ी। तान-अंग में केवल सीधी सपाट तानों का ही प्रयोग किया गया जबकि कुछ और बल, गमक आदि इस ढंग से खप सकते थे।

पहले से रिकार्ड किए गए इस कार्यक्रम में २५ मिनट के बाद जब दूसरा टेप बजाया गया तो मशीन की गति में कुछ फर्क होने के कारण पलक झपकते ही पूरा श्रुतिमंडल एक श्रुति उत्तर गया।

मारु बिहाग के बाद बजाया गया चंद्रकौंस मारु बिहाग जैसा प्रभावशाली नहीं रह पाया। मिश्र काफी और मिश्र खमाज भी साधारण ही थे। संपतलाल की तबला संगत यथोचित थी।

अमरनाथ

SUR-RANG'S INAUGURAL PROG.

सुलोचना का गायन

Sunday 22nd June. 75.

सात जून '७५ को आकाशवाणी के अखिल भारतीय कार्यक्रम में श्रीमती सुलोचना चतुर्वेदी का गायन प्रसारित हुआ।

कार्यक्रम एमन (कल्याण) से शुरू हुआ। एक के बाद एक तीन बंदिशें क्रमशः एकताल, झपताल और तीनताल में (तराना) प्रस्तुत की गईं।

सुलोचना मधुर और खुली आवाज से गाती हैं। विलंबित में कहीं-कहीं फिकरा कहने के बाद थोड़ा रुक कर अपनी ही कही हुई बात का रस भी लेना चाहिए। सम पर आने के बाद एकदम दूसरा बोल बेचैनी पैदा करता है। वे बोल बहुत सहूलियत से कहती हैं। लेकिन वे जगह-जगह तान के प्रयोग के लिए उत्सुक दिखाई देती हैं। वैसे उनकी तान की सधाई की जितनी भी प्रशंसा की जाए, कम है। तराने की बंदिश में लय का बनाव-शृंगार भी प्रशंसनीय था। दूसरा राग उन्होंने शंकरा चुना और वह भी कल्याण का ही राग। वे कोई दूसरा राग चुनतीं तो अधिक उपयुक्त होता।

शंकरा के विलंबित का मुखड़ा मंद सप्तक में था, इस कारण वह और भी मधुर बन गया। एक नयापन आ गया मुखड़े में। स्थाई के भरने में कसावट की कमी थी। अंत में दो चार तानें बहुत जीदारी से हुईं।

प्रेम बल्लभ बहुत अच्छा ठेका कहते रहे। साबरी खान यदि सुनकर संगत करते तो गाना और भी खिलता।

"प्रजानीति"

अमरनाथ